Laxmidas Borkar

Laxmidas Borkar, born as Dattaram Krishna Borkar on 17 August 1925 in Kusman (Quepem), Goa, was the son of Krishna Dattaram Borkar and Umabai Krishna Borkar. He was a distinguished freedom fighter, journalist, writer and social reformer. He began his academic journey with primary education in Marathi. He completed his Lyceum in seven years, laying the foundation for a life dedicated to service, literature and nation-building.

Laxmidas Borkar spent 16 formative years as a freedom fighter. He joined the Goa Seva Sangh in 1943. Later, he became an executive committee member of the Goa Congress Committee (Bombay Branch). A close associate of Dr. Ram Manohar Lohia, he was arrested during the historic 18th June 1946 movement in Margao. He also participated in multiple Satyagraha protests across Goa, including in Shiroda, Ponda and Castle Rock. He often faced arrests, beatings and detentions. His dedication to civil liberties and the call for Goa's freedom remained unwavering.

He played a significant role as office secretary and later president of the National Congress of Goa (Bombay Branch). Representing Goan voices at national and international platforms, he interviewed Mahatma Gandhi on the "Goa Topic". He was selected as the Goan People's representative to sign the representation before the International Court of Justice at The Hague.

Laxmidas Borkar's journalistic journey spanned 51 years. He served at renowned publications including *Loksatta*, *Indian Express*, *Financial Express*, *Screen*, *Navaprabha*, *Lincoln Star* (USA), and *Blitz*. He also held key roles such as Vice President of Mumbai Marathi Patrakar Sangh and played a foundational role in Goa Marathi Patrakar Sangh. He visited Rostock and Berlin in East Germany as well as Moscow in Russia, as part of a journalist delegation.

An accomplished writer, Borkar authored 16 books covering political commentary, travelogues, fiction and biographies. His writings offered in-depth insights into freedom movements, social challenges, and cultural heritage. One of his notable works, published decades after it was written, was released at the hands of the Governor of Goa. The book presents a detailed three-year account of the freedom movement in Goa and has been translated into several Indian and foreign languages.

His contributions include translations and original works in Marathi and Konkani. He also published writings that explored the lives of saints, revolutionaries and social reformers.

Throughout his life, Borkar nurtured literary and professional communities through institutions such as The Goa Hindu Association, Sane Guruji Katha Mala, Mumbai Marathi Patrakar, and Goa Marathi Patrakar Sangh. His influence extended beyond journalism into public consciousness and youth education.

His contributions have been honoured through awards, scholarships, exhibitions, documentary films, and a road named in his memory. His life has been celebrated through exhibitions, symposiums, digital book releases, and a memorial auditorium inaugurated in his honour. A commemorative quiz for students and a new Lifetime Achievement Award instituted by Goa Marathi Patrakar Sangh further reflect the enduring legacy of Laxmidas Borkar.

The Department of Posts is proud to release a commemorative postage stamp celebrating Laxmidas Borkar, a visionary devoted to truth, freedom, and the enduring power of the written word. This stamp honours the memory and work of a man who lived for Goa and stood firmly for the greater ideals of India.

Credits:

Stamp/FDC/Brochure/ Cancellation Cachet	:	Sh. Jairaj T. G.
Text	:	Based on information provided by the proponent.

भारतीय डाक
डाक सेवा-जन सेवा
India Post
Dak Sewa-Jan Sewa

डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS



लक्ष्मीदास बोरकर

Laxmidas Borkar



लक्ष्मीदास बोरकर

लक्ष्मीदास बोरकर का जन्म 17 अगस्त 1925 को गोवा के कुसमान (केपें) में हुआ। उनका मूल नाम 'दत्ताराम कृष्ण बोरकर' था। उनके पिता का नाम कृष्ण दत्ताराम बोरकर और माता का नाम उमाबाई कृष्ण बोरकर था। वे एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, लेखक और समाज सुधारक थे। उनकी प्राथमिक शिक्षा–दीक्षा मराठी भाषा में हुई। उन्होंने अपनी 'लाइसीयम' की डिग्री सात वर्ष में पूरी कर ली थी। कालांतर में, उनकी यह उपलब्धि सेवा, साहित्य और राष्ट्र निर्माण को समर्पित उनके जीवन का आधार बनी।

लक्ष्मीदास बोरकर कम आयु में ही स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गए। उन्होंने अपने जीवन के आरंभिक 16 वर्ष इसी आंदोलन में व्यतीत किए। वर्ष 1943 में वे 'गोवा सेवा संघ' में शामिल हुए। तत्पश्चात, वे गोवा कांग्रेस कमेटी (बॉम्बे शाखा) की कार्यकारी समिति के सदस्य बने। डॉ. राम मनोहर लोहिया के करीबी सहयोगी रहे, लक्ष्मीदास बोरकर 18 जून 1946 को मडगांव में हुए ऐतिहासिक आंदोलन के दौरान गिरफ्तार किए गए। इसके अलावा, उन्होंने शिरोडा, पोंडा और कैसल रॉक सहित समस्त गोवा में विभिन्न सत्याग्रह आंदोलनों में भी हिस्सा लिया। स्वतंत्रता संग्राम में अपनी सक्रियता के कारण उन्हें कई बार गिरफ्तार किया गया, शारीरिक प्रताड़नाएँ दी गईं और नजरबंद रखा गया। बावजूद इसके, नागरिक स्वतंत्रता और गोवा की स्वतंत्रता के आह्वान के प्रति उनका समर्पण अटूट रहा।

लक्ष्मीदास बोरकर ने गोवा राष्ट्रीय कांग्रेस (बॉम्बे शाखा) के कार्यालय सचिव और बाद में इसके अध्यक्ष के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर गोवा की आवाज का प्रतिनिधित्व करते हुए, उन्होंने ''गोवा विषय'' पर महात्मा गांधी का साक्षात्कार लिया। उन्हें हेग स्थित अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के समक्ष अभ्यावेदन पर हस्ताक्षर करने के लिए गोवा के नागरिकों के प्रतिनिधि के रूप में चुना गया।

लक्ष्मीदास बोरकर ने 51 साल तक सक्रिय पत्रकार के रूप में काम किया और लोकसत्ता , इंडियन एक्सप्रेस, फाइनेंशियल एक्सप्रेस, स्क्रीन, नवप्रभा, लिंकन स्टार (संयुक्त राज्य अमेरिका) और ब्लिट्ज जैसे प्रतिष्ठित प्रकाशनों में अपनी सेवाएं दीं। उन्होंने 'मुंबई मराठी पत्रकार संघ' के उपाध्यक्ष के पद पर तथा इसी प्रकार के अन्य महत्वपूर्ण पदों पर भी कार्य किया और 'गोवा मराठी पत्रकार संघ' में आधारभूत भूमिका निभाई। इसके अलावा, उन्होंने 'पत्रकारों के एक प्रतिनिधिमंडल' के सदस्य के रूप में पूर्वी जर्मनी के रोस्टॉक और बर्लिन तथा रूस के मॉस्को का भी दौरा किया।

श्री बोरकर एक प्रतिष्ठित लेखक भी थे। उन्होंने राजनीतिक गतिविधियों, यात्रा वृत्तांतों, कथा साहित्य और जीवनियों पर आधारित 16 पुस्तकें लिखीं। उनकी रचनाओं से स्वतंत्रता आंदोलन, सामाजिक चुनौतियों और सांस्कृतिक विरासत से संबंधित व्यापक विवरण और जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। उनकी एक उल्लेखनीय कृति, लिखे जाने के दशकों बाद प्रकाशित हुई। इसका विमोचन गोवा के राज्यपाल ने किया। इस पुस्तक में गोवा में स्वतंत्रता आंदोलन के तीन वर्षों का विस्तृत विवरण दिया गया है और इसका कई भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

उनकी रचनाओं में मराठी और कोंकणी भाषा में अनुवाद तथा मौलिक रचनाएं शामिल हैं। उन्होंने संतों, क्रांतिकारियों और समाज सुधारकों के जीवन पर आधारित तमाम रचनाएं भी प्रकाशित कीं।

लक्ष्मीदास बोरकर ने 'गोवा हिंदू एसोसिएशन', 'साने गुरुजी कथा माला', 'मुंबई मराठी पत्रकार संघ' और 'गोवा मराठी पत्रकार संघ' जैसी संस्थाओं के माध्यम से जीवन भर साहित्यिक तथा व्यावसायिक समुदायों को पल्लवित करने का काम किया। पत्रकारिता के अलावा जनचेतना और युवा शिक्षा संबंधी विषयों पर भी उनका प्रभाव रहा।

श्री बोरकर के योगदान को सम्मानित करते हुए, उनके नाम पर अनेक पुरस्कार, छात्रवृत्तियां, प्रदर्शनियां, वृत्तचित्र जारी किए गए हैं और उनकी स्मृति में एक सड़क का नामकरण भी किया गया है। उनके जीवन पर तमाम प्रदर्शनियों, संगोष्ठियों, डिजिटल पुस्तकों का समय–समय पर विमोचन किया जाता रहा है। इसके अलावा, उनके सम्मान में एक 'स्मारक सभागार' का भी निर्माण किया गया है। लक्ष्मीदास बोरकर के जीवन व कृत्यों पर छात्रों के लिए शुरू की गई 'स्मारक प्रश्नोत्तरी' तथा 'गोवा मराठी पत्रकार संघ' द्वारा स्थापित एक नया 'लाइफटाइम अचीवमेंट पुरस्कार' उनकी चिरस्थायी विरासत को प्रतिबिंबित करता हैं।

डाक विभाग, सत्यनिष्ठा, स्वतंत्रता और पत्रकारिता के प्रति समर्पित दूरदर्शी नायक लक्ष्मीदास बोरकर की स्मृति में स्मारक डाक–टिकट जारी करते हुए गर्व का अनुभव करता है। यह डाक–टिकट गोवा के लिए अपना समस्त जीवन आहूत कर देने वाले और भारत के महान आदर्शों पर अटल रहने वाले श्री बोरकर की स्मृति और उनके कार्यों के प्रति सम्मान का प्रतीक है।

आभार :

डाक–टिकट / प्रथम दिवस आवरण / विवरणिका / विरूपण कैशे : श्री जयराज टी जी

पाठ : प्रस्तावक से प्राप्त सामग्री के आधार पर

तकनीकी आंकड़े

TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसे
Denomination	:	500p
मुद्रितडाक–टिकटें	:	303765
Stamps Printed	:	303765
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at Philately Bureaus across India and online at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

©डाक विभाग, भारत सरकार। डाक टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

©Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the Stamp, First Day Cover and Information Brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 15.00